International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 5, May 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gage as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

नारीविकासकेसन्दर्भमेंगुरूनानकपरंपराकाविश्लेषण

2100 RECIPT

डॉ. हरप्रीत सिंह *

डॉ. विनोद कुमार*

आजकेभौतिक के सन्दर्भ में वैशवीकरणकेइस युगमेंविश्वविद्यालयोंऔरसामाजिक-सांस्कृतिकसंस्थाओंमेंलैंगिक-समानता, नारीचेतनायानारीसशक्तिकरणकेमुद्देबड़ेचर्चाकाविषयरहेहैं; अनन्यसंस्थाएँ और विभिन्न रचनाएँ नारीएकता या नारीविकास काप्रचार कर रहीहैं। नारी विकास के अंतर्गत लिंग समानता और नारीचेतनाकेसंकल्पकोसमझनेसेपूर्वनारीकीसामाजिकस्थितिकोऐतिहासिकपरिप्रेक्ष्यमेंसमझनाआवश्यकहोजाताहै।

हमारेसमाजमेंनारीकोहमेशातिरस्कृतनज़रोंकेसाथहीदेखागया है।सम्पूर्णदृष्टिकोणनारीविरोधीबना रहा है, जोहरक्षेत्रमेंपुरुष के नेतृत्वको स्वीकार करताहैऔरनारीकोनिन्दितकरताहै और हरसूरतमेंनारीकोपुरुषकेमुकाबलेमें घटिया, तुच्छयानीचसाबितकरतारहा है।इसीदृष्टिकोणके कारण हीआदि-कालसेहीनारीकाजीवनत्रासद-भरारहाहै।पुरुषकेहाथोंमेंकठपुतलीकीतरहवहविचरणरहीहै।नारीकोपुरुषनेकेवलअपनेऐश- ओ- इशरत का साधन हीमानाऔरकाम-तृप्तितकहीसीमितरखाहै।

प्राचीनधर्म-ग्रंथोंमेंनारीकीस्थितिबहुतकरुणामयीरहीहै।धर्म-ग्रंथनारीकोपतिकीदासीऔर मृतपतिकेबाद विधि का विधानसमझकरपतिकीचितामेंजीते-जी जबरनजलाकरमारदेने (सतीकीरस्म) कीप्रवृत्तिप्रचंडथी।मनुस्मृतिमेंआताहैकिस्त्रीसदाहीपुरुषकीसुपुर्दगीमेंरहे।बचपनमेंपिता, जवानीमेंपतिऔरबुढापेमेंपुत्र-पौत्रउसकीसंभालकरें, स्त्रीआज़ादनविचरण

* समाज विज्ञान एवं भाषा विभाग, लवली प्रोफैशनल यूनिवर्सिटी (पंजाब)

करे.....।स्त्रीपतिकेसाथसतीहोजाये।अंगिरास्मृतिसतीकीरस्मकीपुष्टिकरतीदृढ़करवातीहैकिसतीहोनेवालीस्त्रीकोसाढ़ेतीनकरोड़वर्ष स्वर्गमेंरहनेकाआनंदमिलताहै।हेमचंद्रनेनारीकोनरककेमार्ग कादीपक, ग़मोंकाशिखर, दुखोंकीखानकहाहै।यहाँतककितुलसीदासनेपशु, गँवारऔरशूद्रोंकेसमानस्त्रीकोरखाहै:

ढोल, गँवार, सूद्र, पशुनारी॥

सकलताड़नाकेअधिकारी॥ [1]

भक्तछज्जूनेकहाकियदिस्त्रीकागज़कीभीबनीहोतोभीउससेदूर-दूरहीरहो।गुरूसाहिबानसेपहलेपंजाबमेंनाथों-जोगियोंकीपरंपराथी।सिद्ध-पंथमेंऔरतकोकोईहैसियतयादर्जा status प्राप्त नहींथा।औरतोंकोअपनेहितोंयास्वार्थोंकेलिएइस्तेमालकियाजाताथा।नाथपंथवैरागीधर्मथा।वैराग्यकीशिक्षादेताथा ; इसलिएऔरतकीनाथों-जोगियोंनेहमेशा निन्दा की है, क्योंकियहउनकीमंजिलकेलिएबाधायारुकावट रही।जोगियोंकायहमाननाथाकिऔरतोंकेसाथसंयमरख पानाअसंभवहै।वहऔरतकीतुलना'बघियाड़नी'या'पुरुष-भक्खनी' से करतेथे।गोरखवाणीमेंआताहै:

बाघिनजिंदलेई,बाघिनबिन्दलेई, बाघिनहमारीकाइआ।

इहबाघिनत्रैलोईखाई, बस्तिगोरखिपाइआ। [2]

लिंग-असमानताकायहप्रश्नकेवलइसदेशकानहींबल्किविश्व-स्तरपरइसकाबोलबालाहै।सिर्फ़पूर्वमेंहीनहींपश्चिममेंभीनारीकी दशादयनीयऔरचिंताजनकरहीहै।simone De beauvoirनेअपनीपुस्तक The second Sex कीभूमिकामेंविद्वानोंकेकईऐसेकथनपेशकियेहैंजोनारीकोपुरुषकीअपेक्षाघटियासाबितकरतेहैं।जैसेअरस्तुकीधारणा हैकि'नारीकुछगुणोंकीकमीके कारणनारीहै'(the female is a female by virtue of a certain lack of qualities.) सेंटथामस (st.thomas) नेनारीको imperfect man शब्दोंकेसाथसंबोधनकियाहै।बैंडा (benda) कीसोचके अनुसारपुरुषतोनारीके बिनाअपनेबारेमें सोचसकताहैपरन्तुनारीपुरुषसेबिनाअपनेबारेमें नहींसोचसकती

गुरबाणीदबे-कुचले, निम्न व कमज़ोरों, दलितऔरदमितश्रेणियोंकेसाथहोतेभेदभाव, शोषण, अत्याचार केख़िलाफ़क्रांतिकारीप्रवचनहै।इन दमितश्रेणियोंमेंनारीभीशामिलथी,जोसदियोंसेपुरुषकेज़ुल्मोंकोसहनकररहीथी।ततकालीनसमाजमेंजबकिबाकीधर्मोंकीसंस्कृतिमेंनारीकोतिरस्कृतकिया जारहाथा; गुरूनानकसाहबनेनारीकेरुतबेको सम्मानपूर्ण स्थान प्रदान

किया।इसीपरंपराकोबाकीगुरूसाहिबाननेभी स्थापितकिया। इस प्रकारनानकपरंपराकीधारणाअस्तित्वमेंआई।संकल्पसाहित्यकेसंदर्भमेंलिंग-समानताकेकईप्रमाणमिलतेहैं।औरतयानारीकीसहीस्थितिकासर्वेक्षणकरनाहोतोपहलेमध्यकालीनऐतिहासिकपरिस्थितियोंकालेखा-जोखाकरनापड़ेगा।मध्यकालकासमयअंधकारकाकालथा।गुरूसाहिबानकेसमयसमाजमेंजीवनकाहरक्षेत्रअसुरक्षित था।हरतरफ़आपा-धापीकामाहौलथा।लूट-मारकीपरंपराज़ोरों परथी।अधर्मऔरपापकाबोलबालाथा।अंध-विशवासऔरपाखंडकीप्रधानताथी।गुरूनानकसाहबततकालीनअवस्थाकोऐसेबयानकरतेहैं:

लबुपापुदुइराजामहताकूड़ुहोआसिकदारु॥
कामुनेबुसिदपुछीऐबिहबिहकरेबीचारु॥
अंधीरयितगिआनविहूणीभाहिभरेमुरदारु॥[3]

मलारकीवारमेंगुरूनानकसाहबराजाओंकीतुलनाभयानकशेरोंऔरमंत्रियोंकीतुलनाकुत्तोकेसाथकरतेहुए कहतेहैं:

राजेसीहमुकदमकुते॥जाइजगाइन्हिबैठेसुते॥
चाकरनहदापाइन्हिघाउ॥रतुपितुकुतिहोचिटजाहु॥[4]

बहुतस्पष्ट सीबातहैकिऐसेदिशाहीनऔरपुरुषकेंद्रितसमाजमेंऔरतकीहस्तीयाव्यक्तित्वकीक्याकद्रहोगी? ऐसेसमयमेंऔरतकीदयनीयस्थितिपरपुरुषकेदमनकारीस्वभाव केबारेमें समकालीनग्रंथोंमेंअनेकों सन्दर्भमिलतेहैंजिनमेंसेकुछेककाहमनेज़िक्रकियाहै।'गुरूनानकदेवजीकेसंसारआगमनसेपूर्वहिंदुस्त्रीको'पैरकीजूती','घरकीचाकर','आधाज़हर','आधाअमृत','कुदरतकीएकमज़ेदारगलती'(aggreable blunder),'जहाँईश्वरफेलजोगयावहांस्त्रीबनादी', स्त्रीमेंआत्मानहींहोती', तथा अन्य भी कईबुरेशब्दोंकेसाथइसकोपुकाराजाताथा।'[5]

उपर्युक्तसभीपुरुष-कथननारीकीनम्र, बिनाआसरेकी, नितानी, निगुणीअवस्थाकाचित्रणकरतेहैं।यहवचननारीतिरस्कारऔरनारीकेवस्तूमूलक (object) अस्तित्वकेसूचकहैं।कहींभीनारीकेआत्म(subject) रूपकाचित्रणनहींहै।नारीकेऊँचेगुणजैसेसब्र, संयम, सहनशीलता, सेवा, प्यार, त्याग, परोपकारी, मेहनती, ईश्वरके भाणेकोमाननेवालीनारीकी

ओरकिसीकाभीध्याननहींगया।संकल्पकेसंस्थापकश्रीगुरुनानकदेवजीपहलेऐसेक्रांतिकारीयुग-पुरुषहुएहैंजिन्होंनेनारीके हकमेंआवाज़बुलंदकीऔरपरंपरासेचलीआरहीस्थापितपरिभाषाओंकोबदल डाला।गुरबाणीकेपाठऔरप्रवचनसेयहबातसहजहीस्पष्टहोतीहैकी यहरचनाहरकिस्मकेज़ुल्म, भेदभाव, अत्याचारऔरशोषणकेदृश्यकेविरोधमेंखड़ीहोतीहै।इसीलिएगुरबाणीकासंवादजहाँलिंग-समानताकेपरिप्रेक्ष्यमेंप्रचलितसमाज-संस्कृतिमेंनारीकीदयनीयस्थितिकोप्रकटकरता हैवहाँसाथ-साथनारी-दुष्टोंकोभी सही मार्ग दिखाताहै।गुरूजीनेनिर्भयताकेसाथसमयकेसमाजकेसाथटक्करलेतीततकालीनराजाओंमहाराजाओं,मुल्लों-मौलानों, पंडितोंकोसंबोधनकरतेकहा:

भंडिजमीऐभंडिनिमीऐभंडिमंगणुवीआहु॥
भंडहुहोवैदोसतीभंडहुचलैराहु॥
भंडुमुआभंडुभालीऐभंडिहोवैबंधानु॥
सोकिउमंदाआखीऐजितुजमिहराजान॥
भंडहुहीभंडुऊपजैभंडैबाझुनकोइ॥
नानकभंडैबाहराएकोसचासोइ॥[6]

गुरूनानकसाहबकायहप्रवचनसमाजमेंनारीकेअफसोसजनकऔर त्रासद स्थितिकेविद्रोहमेंसेउपजासंवादहैजोनारीकीसामाजिकप्रतिष्ठताऔरसम्मानकोस्थापितकरनाचाहताहै।पुरुषसमाज नारीकेबिनाअधूराहै।व्यक्तिगतरूपमेंऔरसामाजिकरूपमेंनारीकेव्यक्तित्वकेसाथहीपुरुष,जीवनकीसंपूर्णताकोग्रहण करताहै।जबनारीकेअस्तित्व साथहीसमाजकीविकासशीलताऔरगतिशीलताजुड़ीहुईहैतोफिरनारीकेअस्तित्वकोअहमीयतऔरसम्मानकीनज़रों केसाथक्योंनहींदेखाजाता? पुरुष- प्रधानसमाज केइसदोगलेपनकीगुरबाणीनेभरपूर निंदाकी है।

श्रीगुरुग्रंथसाहबकासंदेशसमस्तमानवताकेलिएसर्व-सांझाऔरजन-हितकारीहै।इसीकारणगुरबाणीमें'सभेसाझीवालसदाइिनतूंकिसैनदिसिहबाहराजीउ'[7] 'हरितुममिहजोतिधरीहरिबिनुअवरुनदेखहुकोई'[8]'सभमहिजोतिजोतिहैसोइ'[9]आदिसंवादसारीमानवताकोअपनेक लेवरमेंलेनेकेलिएउत्सुकऔरतत्परहैं।गुरबाणीके अनुसारसभीजीवोंमेंएकअकालपुरुष का

अस्तित्वहै।कोईभीजीवतबहीजन्मलेताहैजबपरमात्मा स्वयंउसमेंअपनीरोशनीरखताहै।'मनतूंजोतिसरूपुहैअपणामूलुपछाणु'[10]इसीभावके अंतर्गतउच्चारणकिया गयाशब्दहै।यहशब्दगुरबाणीमेंइसअंतर्दृष्टिकेसूचकहैंकिकोईमानवजाति, जन्म, पुरुषयास्त्रीहोनेकेकारणछोटायाबड़ानहींहोता।सभीजीवसामानहैं।संकल्पस्त्रियोंयापुरुषोंमेंकोई भेदनहींसवीकार करता।संकल्पसिर्फ़गुरमुखऔरमनमुखदोश्रेणियोंकेसाथसंवादरचाता है।

'गुरूग्रंथसाहब'कीसम्पूर्णवाणीवैराग्यऔरसंन्यासकाखंडनकरतीहै।गुरबाणीमेंगृहस्थजीवन पर बलदियागयाहै।यहधर्मगृहस्थियोंकाधर्म (A religion of householders) है।गृहस्थकीअहमीयतकोगुरूनानकसाहबकीसिद्धोंकेसाथहुईवार्तालापसेसमझाजासकताहै।सिद्धगुरूनानकसाहबसे प्रश्नकरतेहैं:

दुनीआसागरुदुतरुकहीऐकिउकिरपाईऐपारो॥
चरपटुबोलैअउधूनानकदेहुसचाबीचारो॥
आपेआखैआपेसमझैतिसुकिआउतरुदीजै॥
साचुकहहुतुमपारगरामीतुझुकिआबैसणुदीजै॥[11]

गुरूनानकसाहबउत्तरदेतेहैं:
जैसेजलमिहकमलुनिरालमुमुरगाईनैसाणै॥
सुरितसबिदभवसागरुतरीऐनानकनामुवखाणै॥[12]

गुरूअर्जुनदेवजीकेवचनहैं: नानकनामुविसआजिसुअंतिरपरवाणुगिरसतउदासाजीउ॥[13]
सुखमनीसाहबमेंभीज़िक्रआताहै:

अनिदनुकीरतनुकेवलबखानु॥
गिर्हसतमिहसोईनिरबानु॥[14]

गुरबाणीदृढ़करवातीहैकिसंसारमेंरहतेहुएसंसारकीसंसारिकतासेनिर्लिप्तहोकरविचरणहीउत्तमजीवन-जाँचहै।जैसेकमलजलमेंरहताहुआभीउससे निर्लिप्तरहताहै;

मुरग़ाबीनदीमेंडुबकीलगातीहुईभीपंखोंकोजलकेप्रभावसेमुक्तरखतीहै।संसारमेंरहकरसंसारकीमोहमायासेपरउठकरजीना'अंजनमाहिनिरंजिनरहीऐबहुड़िनभवजलिपाइआ'[15]हीअसलीजीनाहै।अर्थातमायारूपीसंसारमेंगृहस्थीकीतरहविचरणकरइससंसारकेदुखोंकोभोगनाऔरमायासेनिर्लिप्तरहकरनेकी औरईमानकेमार्गपर चलनाहीअसलीयोगहै।यहबातजोगियों, नाथोंऔरपंडितोंकेवर्णआश्रममर्यादासेबिल्कुलविलक्षण थी।कर्मयोग, गृहस्थपालनऔरनारीकीसमानताकापक्षइसमेंविशेषतौरपरशामिलथा।गुरूओंके मतानुसार'काइआकिरदारऔरतयकीना'थी।

गृहस्थकीबुनियादपुरुषऔरनारीदोनोंकेआपसीसंबंधोंऔरआधारितहोतीहै।गृहस्थकाविकासहीसमाजकेविकासकीबुनियादबनताहै।सर्वपक्षीय विकासकेलिएपुरुषऔरऔरतकेसंबंधोंमेंएकसारताहोनीबहुतज़रूरीहै।संबंधोंमेसमतातबहीआसकतीहैजबदोनोंपक्षोंकाएकसमानसत्कारऔरसम्मानहो।गुरबाणीकाआधारबिन्दूगृहस्थहै।गृहस्थमें विचरणकरसत्यके मार्ग परसंयमके साथ चलतेहुए, सिमरनमेंजुड़नाहीगुरसिखकापरमकर्तव्यहै।गुरबाणीपति-पत्नीकेसच्चेरिश्तोंकीपैरवीकरताहै।पतिकोअपनीपत्नीको ह्रदयसेस्वीकारकरनेऔर सम्मानदेनेकासंवादरचाता है।गुरबाणीविवाहेतरसंबंधों (extra marital affairs) यापरनारीरिश्तोंकाभरपूररूपमेंखंडनकरतीहै।यहसमस्याआजकेसमयमेंबहुतविकरालरूपलेरहीहै।वर्तमान में भौतिकताऔरउत्तर-आधुनिककालमेंरिश्तोंमेंबहुतपतनहोगयाहै।बसे-बसाएघरटूटरहेहैं।गुरू-साहिबाननेसदियोंपूर्व औरतके प्रतिवफ़ादारीऔरप्यारकीभावनाकोप्रस्तुतकियाहै; जोकिसीभीसमाजकीऔरतकेलिएसम्मानवालीबातहोसकतीहै।

परधनपरदारापरहरी
ता कैबसेनिकटि बसै नरहरी॥[16]

विभचारीव्यक्तिकोअपनेकुकर्मोंकेकारण हमेशापछतावेकीआगमेंजलनापड़ताहै।गुरबाणीमेंमानवकोसचेतकियागया है:

निमखकामसुआदकारणिकोटदिनसुदुखुपावहि॥

घरीमुहतरंगमाणहि

फिरिबहुरिबहुरिपछुतावहि॥[17]

गुरूगोबिन्दसिंहजीभीगुरूनानकपरंपराकीप्रोढ़ताकरतेहुए अपनीवाणीमेंइसभावनाकोऐसेप्रकट करतेहैं:

निजनारीकेसाथनेहतुमनितिबढैयहु॥
परनारीकी सेजभूलिसुपनेहुंनजैयहु॥[18]

आदमीयाऔरतकोईभी परस्परप्यारभुलाकरअगरबाहरविचरण करताहैतोजीवननरकबनजाताहै।'जैसासंगुबिसीअर सिउहैरे तैसेहीइहुपरग्रिहु'[19]काफरमानकुकर्मोंऔरव्यभिचारसेपूरीतरहगुरेज़करनाहै।इज्जतऔरसेहतमंदीभीइसीमेंहै।गुरबाणी'देखिपराईआचंगिआंमांवांभैणाधीयाँजानै 'एकानारीजतीहोइपरनारीधीवखानै'काशक्तिशालीप्रवचनबनातीनारीकोमानदेतीहै।गुरबाणीमेंनकेवलगृहस्थपर ज़ोरदियागयाहैबल्किपुरुषऔरऔरतकेरिशतों कीगरिमाकोबरकराररखनेकाभीभरपूरयत्नकियागयाहै।गृहस्थकीअहमीयतकेसंवादकेसाथयहबातसहजहीस्पष्टहोजातीहैकिसिक्खधर्ममेंनारीकाबहुतगौरवशालीस्थानहै।लैंगिक समानता, पति-पत्नीकीएकतायाभाईचारासिर्फ़शब्दोंकाजालबनकरभ्रमउत्पन्ननहींकरता, बल्किदृढ़रूपमेंपुरुषऔरनारीकोजोड़ताहै:

धनपिरुऐहीनआखीअनिबहिनइकठेहोइ॥
एकजोतिदोइमूरतीधनपिरुकहिएसोइ॥[20]

गुरबाणीकायहसंवादलिंग-समानताकोमूर्तिमानकरताहै।लिंग-सामानतातबहीहोगीजबअमलकेरूपमेंनारीकोपुरुषकेसमानदर्जामिलेगा।इसप्रकारगुरबाणीनारीऔरपुरुषमेंकोईफ़र्कनहींरखती।उनकेबुनियादीअधिकारबराबरहैंऔरदोनोंपुरुष यानारीबादमेंहैं, पहलेमनुष्यहैं।नारीकिसीभीपक्षसेपीछेनहीं।इसीलिएउसेसामाजिक, आर्थिकऔरराजसीक्षेत्रमेंपुरुषोंकेबराबरहकहोनेचाहिएं।निजीजीवनऔरसामाजिकजीवनकीगाड़ीकोसंतुलितरखने

मेंनारीपुरुषकीतरहहीसामर्थ्यवानहै।गुरूग्रंथसाहबकेव्याख्याकारऔरसिक्खधर्मकेमहानचिंतकभाईगुरदासजीस्त्रीके सत्कारमेंफरमातेहैं:

लोकवेदगुणुगिआनविच, अरधशारीरीमोखदुआरी[21]

गृहस्थजीवनकाप्रारंभिकआधारविवाहहै।संकल्पमें'आनंदकारज'और'लावां'कीरचनाइसीसंस्थाकाकी सम्पूर्ण अभिव्यक्ति है।आनंदकारजमेंचारलावोंकीमर्यादाहै।जोपुरुषऔरऔरतकेसंबंधोंकासंगठनात्मकप्रवचनसृजनकरतेहैं।जैसेपहली लावंमेंआताहै:

हरिपहिलड़ीलावपरविरतीकरम द्रिड़ाइआबलिरामजीओ॥[22]

पहलीलावंमेंप्रस्तुतप्रवृत्तिकर्मस्त्री-पुरुषकेपरस्परसंयोगकीधार्मिकस्वीकृतिहै।यहसंयोगहीसांसारिकविकासकासाधनहै।गुरूग्रंथसाहबमेंनारीके'माँ'रूप कोबहुतसम्मानदियागयाहै।सारीकायनातमेंमाँसेअधिककोईकरामातीयासृजनात्मकशक्तिनहींहै।औरतकेइसजननी रूपकोगुरूसाहबने'धनसुजननीजिनिगुरूजणियामाई'कहकरप्रशंसाकी गयी है।गुरबाणीसिर्फ़जननीकेरूपमेंहीनारीकीबढ़ाईनहींकरतीबल्किनारीकीममताऔरनारीत्व femininity कीपहचानभी करती है:

सुतअपराधकरतहैजेतो॥जननीचीतिनराखसितेते॥
रामईआहउ बारिकतेरा॥काहेनखंडसुअवगुनमेरा॥
जेअतिक्रोपकरेकरिधाइआ॥ताभीचीति राखसिमाइआ॥ [23]
पूतपेखिजीउजीवतमाता॥ओतिपोतिजनुहरिसिउराता॥[24]

गुरूग्रंथसाहबमेंकेवलऔरतकोजननीकेरूपमेंप्रकटकरहीनारी का वृतांतनहींसृजनकरतीबल्किपितृविधानकोस्थापितकरतेयहस्पष्टकियाहैकिपुरुष औरनारीएकदूसरेकेपूरकहैं।

कतकीमाईबापुकतकेराकिदू
थावहुहमआए॥अगिन बिम्बजलभीतिरनिपजेकाहेकमिउपाए॥ [25]

भारतीयपरंपरामेंएक'अर्धनारीश्वर'कामाडलआताहैजोनर-नारीकीपूरकताको दर्शाते हुएयहमूर्तिमानकरताहैकिदोनोंकीअस्मिताएकदूसरेसेबिनाअधूरीहै।गुरबाणीमेंभीइसीभावकासन्दर्भ मिलताहै:

पुरुषमहिनारिनारिमहिपुरखाबूझहुब्रह्मगिआनी॥
धुनिमहिधीआनुधीआनमहिजानिआगुरमुखिअकथकहानी॥[26]

'अर्धनारीश्वर'कीऐसीस्थितिकेअंतर्गतनर-नारीकीएकताऔरसमानताकीभावनाप्रकटहोतीहैजोसभीभेदभावऔरद्वेषकोख़त्मकरदेतीहै।इसअन्तर्दृष्टिसेनर-नारीकेमेंपरस्परसहयोग, भाईचारेऔरसमताकीप्रवृत्तिबलपकड़तीहै, जैसेयहपंक्तियाँस्पष्टकरतीहैं:

नारीपुरखुपुरखुसभनारीसभुएकोपुरखुमुरारे॥
संतजनाकीरेनुमनिभाईमिलि हरिजनहरिनिसतारे॥[27]
आपेपुरखुआपेहीनारी॥आपेपासाआपेसारी॥
आपेपिड़ बाधीजगुखेलैआपेकीमतिपाईहे॥[28]

शोध-पत्रकेमूलविषय'नारीविकासकेसंदर्भमेंगुरूनानकपरंपरा' के बारे मेंकियेअध्ययनऔरविश्लेषणसेयहनिष्कर्षनिकलताहैकिसदियोंपहलेगुरूनानकसाहबऔरउनकी संकल्पपरंपरानेलैंगिकताऔरनारीचेतनाकेसंदर्भमेंपुरुष-नारीएकताकाप्रवचनरचाया; जोआजभीसमूचेविश्वकेलिएज्ञानकाप्रेरणाजनकस्रोतहै।

सन्दर्भ:

1. तुलसीदास, internet source, रजिन्दरसिंहभट्टी, हरसिमरनसिंहबाजवा (संपादक), सिक्खधर्म: मानववादीपरिप्रेक्ष्य, पृ.145.
2. नाथवाणी, पन्ना
3. श्रीगुरुग्रंथसाहब, पृ.468.
4. वही, पृ.1288.
5. कुलदीपसिंह (डा.), सिक्खधर्म: मानववादीपरिप्रेक्ष्य, पृ.145

6. वही, पृ.473.

7. वही, पृ.97

8. वही, पृ.922.

9. वही, पृ.13.

10. वही, पृ.441.

11. वही, पृ.938.

12. वही, पृ.938.

13. वही, पृ.108.

14. वही, पृ.281.

15. वही, पृ.332.

16. वही, पृ.1163.

17. वही, पृ.403

18. गुरूगोबिन्दसिंह, चरित्र 21- 51/ 3

19. वही, पृ.403

20. वही, पृ.788.

21. भाईगुरदास, बारपाँचवी, पद 16

22. श्रीगुरुग्रंथसाहब, पृ.773.

23. वही, पृ.478.

24. वही, पृ.198.

25. वही, पृ.156.

26. वही, पृ.878.

27. वही, पृ.983.

28. वही, पृ.1020.